डालास (टेक्सास) संयुक्त राज्य अमेरिका
सितम्बर १२, २०००

सन्देश संख्या ३०

'क्रिया–तकनीक' और सत्य

क्रिया–तकनीक एक पात्र है, और सत्य, उसमें रखा जाने वाला पदार्थ।

सत्य की अनुभूति के लिये तकनीकों में सिमटना नहीं बल्कि उसका प्रयोग करते हुए उससे आगे निकलना होगा।

सत्य का उदय आपके अहम् से निर्मित चित्तवृत्ति के प्रति निरपेक्ष जागरूकता से होता है।

विकल्परहित सचेतनता अर्थात् पूर्ण साम्यावस्था मन को शून्यता (निर्मनता) की ओर ले जाता है।

मन की यह शून्यता ही पूर्णता है, पवित्रता है।

शून्यता विभेदकारी चित्तवृत्ति के विषयों अर्थात् मन से मुक्ति है।

मन के मुख्य विषय भय और लोभ हैं ।

भय को परिष्कृत शब्दों में आशंका, आक्रामकता, चिन्ता, द्वेष, असुरक्षा, अन्तर्बाधा, दबाव, तनाव आदि कहा जाता है।

लोभ स्वीकार्य शब्दावली में महत्वाकांक्षा, पूर्वानुमान, अपेक्षा, आकांक्षा एवम् अभिलाषा के रूप में जाना जाता है।

सभी धर्म, सम्प्रदाय एवं पंथ, आध्यात्मिकता की आड़ में आपके भय और लोभ को प्रोत्साहित एवं संपोषित कर अपनी रोटी सेंकते हैं।

आकांक्षाहीन अवस्था नैराश्य नहीं है। बल्कि, यह एक जाग्रतावस्था है।

जब भय और लोभ लुप्त होने शुरू होते हैं तब विलक्षण ऊर्जा एवं सुखबोध का एक साथ उदय होता है।

क्रियायोग की दीक्षा केवल कुछ तकनीकों का प्रशिक्षण नहीं है। प्रशिक्षण तो कुत्तों को दिया जाता है। मानव प्राणी तो शिक्षित किये जाते हैं जिसके कारण वे परिपक्वता के साथ समझदारी विकसित करने में सक्षम होते हैं।

शिक्षा का अभिप्राय सूचनाओं का संचय और उधार लिये हुए ज्ञान का अर्जन नहीं है और न ही यह दूसरों को प्रभावित करने के लिए अपने नाम के आगे लिखे जाने वाले आकषक उपाधियों को प्राप्त करना है। 'आध्यात्मिक लोग', जिन्हें प्रामाणिक संस्थाओं से इस प्रकार की उपाधि उपलब्ध नहीं हो पाती है, संदिग्ध स्रोतों से अस्तित्वहीन जाली उपाधियाँ प्राप्त कर अपने अज्ञान तथा हीनभावना को छिपाने के लिए अपने नाम के आगे मोटे–मोटे अक्षरों में इसे लिखते हैं।

जब शिक्षा, चैतन्य की जागृति किए बगैर, मात्र बुद्वि के माध्यम से सूचना एवं ज्ञान के संचय तक सीमित रहे तब इससे मूढ़ता दूर नहीं होती। ऐसी शिक्षा के ड्गलस्वरूप एक अशिक्षित मूर्ख एक शिक्षित मूर्ख हो जाता है – अर्थात् मूर्खता बनी रहती है।

चैतन्य को ज्ञान में, ज्ञान को सूचना में और सूचना को सूचना के प्रदूषण में खोयें नहीं।

शीघ्र एवं क्षणिक सांत्वना के लिए सद्गुरू, जो एक पावन प्रक्रिया है, को क्षुद्र व्यक्तित्व में परिवर्तित न करें।

आपमें भी यह प्रक्रिया घटित हो सकती है, यदि आप अपनी धारणाओं, गन्दगी, धूर्तता एवं लाभ–हानि की गणना के दुष्चक्र से छुटकारा पा सकें।

सद्गुरू रूपान्तरण के परिचायक हैं। यह रूपान्तरण, एक धर्म से दूसरे धर्म में या एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय में नहीं, बल्कि बन्धन से मुक्ति, पीड़ा से परम पवित्र तथा क्रूरता से करुणा में है।

सीखने के लिए उन बातों को भूलने के लिए तैयार रहिए जो आपने इस दुनिया में सीख तो ली हैं पर वे सीखने योग्य नहीं थीं। एक सच्चे एवं जिज्ञासु शिक्षार्थी की तरह अनुशासित बनें। तब एक और एक (गुरू और शिष्य) मिलकर दो नहीं शून्य हो जाते हैं।

नमो नारायणाय

पूर्ण चैतन्य को समर्पण।